प्रेमबानी भाग 2 ॥ पेज 393 ॥ शब्द 38 ॥ खिला मेरे घट में आज बसन्त	
हिंदी	संस्कृत
खिला मेरे घट में आज बसंत ॥ टेक ॥	अद्य मम घटे (शरीरे) वसन्तः विकसितः ॥टेक॥
भाग मेरा अचरज जाग रहा । हुए अब परसन सतगुरु संत ॥ १ ॥	मम अद्भुतभाग्यं जागर्ति । अधुना सद्गुरुसन्तः प्रसन्नः जात: ॥ १ ॥
सुरत मन घट में दीन चढ़ाय । कँवल जहाँ खिल रहे आज अगिंत ॥ २ ॥	आत्मा मनश्च घटे आरोहयतः । अद्य असंख्यानि कमलानि विकसन्ति यत्र ॥ २ ॥
शब्द का निरखा घट परकाश । मधुर मधुर धुन बजत अनंत ॥ ३ ॥	घटे (अन्तस्थले) शब्दस्य प्रकाशः ऐक्षत । मधुरमधुराः अनन्त ध्वनयः निनदन्ति ॥ ३ ॥
खेल रही हंसन सँग कर प्रीति । सुरत हुई सुन में अभय अचिंत ॥ ४ ॥	प्रीतिं कृत्वा हंसैः सह कीडति । सुन्नपदे आत्मा (सुरत) अभय अचिन्तश्च जातः ॥ ४ ॥
सत्त अलख और अगम के पारा । राधास्वामी चरनन जाय मिलंत ॥ ५ ॥	सत्तात् अलखात् अगमात् च पारम् रा धा/धः स्व आ मी चरणयोः गत्वा मिलति ॥ ५ ॥